जिंदगी के हालात कितने भी विपरीत क्यों न हो

हर हाल में कायम रखें उम्मीद

चार मोमबत्तियाँ थी। वे मधुर रोशनी बिखेर रहीं थी। माहौल इतना शांत था। कि उनकी आपस में एक–दूसरे से बातचीत साफ सुनाई दे रही थी। पहली मोमबत्ती अपना परिचय शांति के रूप में कराते हुए कहा–

'मैं शांति हूँ' , 'अब दुनिया में शांति के पुजारी नहीं रहे। ऐसे में मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं है, इसलिए मैं बुझ जाना पसंद करूंगी' इतना कहते ही वह बुझ गई। दूसरी मोमबत्ती ने कहा–

' मैं आस्था हूँ, लेकिन अब लोगों के दिलों में आस्था नहीं रही। इसलिए मेरे जलते रहने का कोई मतलब नहीं है। ' यह कहने के साथ वह भी बुझ गई। जब तीसरी मोमबत्ती की बारी आई तो उसने अपनी पहचान कराते हुए कहा।

'मैं मोहब्बत हूँ' उसने शिकायत करते हुए कहा– 'अब लोगों के दिल में मोहब्बत और आपसी समझदारी नहीं रही। यहां तक कि अपने करीबी लोग भी एक– दूसरे से दूर हो गए हैं। इसलिए मेरा मोहब्बत की बातें करना फिजूल हो गया है।' इतना कहकर तीसरी मोमबत्ती भी बुझ गई।

इसी बीच एक बच्ची कमरे में प्रवेश करती है और देखती है कि तीन मोमबत्तियाँ नहीं जल रहीं है। उसने तीनों मोमबत्तियों से पूछा कि उन्हें तो अंत तक जलना था फिर वह क्यों बुझ गईं ! यह कहकर बच्ची फूट–फूट कर रोने लगी। चौथी मोमबत्ती जो जल रही थी, इस पूरे दृश्य को देख रही थी। उसने बच्ची से कहा, 'मैं उम्मीद की किरण हूँ' और इसीलिए रोती नहीं। मैं दूसरी मोमबत्तियों को जलाने में तुम्हारी मदद कर सकती हूँ। यह सुनकर बच्ची की आंखें चमक उठी। उसने जलती मोमबत्ती को हाथ में लिया और बांकी तीन मोमबत्तियों को एक–एक कर जला दिया ।

यह पूरी कहानी मणिरत्नम की फिल्म की स्क्रिप्ट जैसी लगती है।

जिंदगी में हालात कितने भी विपरीत क्यों न हों, हमें उम्मीद की किरण को रोशन रखना चाहिए।

Courtesy Dainik Bhaskar, Bhopal